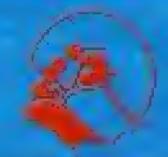


तालाब के मज़े



पढ़ना है समझना



प्रकाश संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2019 फ़ैव 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PIB IIT NSV

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन भैंडी, कृष्ण कुमार, ज्योति संदी, दुलदुल विष्णवास, मुकेश मालवीय, गणिका बेनन, राजलगी शामा, लाला याण्डे, स्वाति बर्मी, साहिका चौशाल, दीपा कुमारी, सोनिका कौशिक, मुरुजील शुभल

संवर्धन-संघर्षकान्तर्गत - लाइब्रेरी युक्ता

चित्रांकन - कृष्णका एस. नकला

मञ्चा तथा आवागता - निधि याधवा

ईरंदीप. पौ. आवरेंदर - जार्जना गुजा, अंशुल युज्ज्वल

आधार ज्ञापन

गोपेन्द्र कृष्ण कुमार, निर्देशक, गण्डोल शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर जयुआ कामल, गण्डोल निर्देशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोडोगिकी संस्थान, गार्हीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर ने, नं. वाशिंग्टन, विभागाध्यक्ष, प्रार्थित शिक्षा विभाग, गण्डोल शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर गणजन्य जापी, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय एकीकृत अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर नंगुना पाठ्य, अध्यक्ष, शिक्षण उपलेखपट्र सेन, गण्डीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय संवेदिका समिति

श्री अशोक वाज्रोदी, अध्यक्ष, पूर्व कृतपति, प्रशिक्षण जापी अंतर्राष्ट्रीय शिल्पी विश्वविद्यालय, जापी; प्रोफेसर फरीद, अक्षुरन्धा, छत्ती, विभागाध्यक्ष, गण्डोल उपलेखन विभाग, जापिया विशिया इलामिया, दिल्ली; डॉ. अर्जुननंद, रोहत, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. जयवन गिला, सोहूरी, अर्हं एल. एच.एफ.एल., मुंबई; मुश्ती नुवहित हासन, निर्देशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री गंगेश धर्मकार, निर्देशक, निर्वाच. जयपुर।

80 वी.एस.एप. पा. प्रशिक्षण

प्रशिक्षण विभाग में संचित, गण्डोल शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण जापी, वै. अध्यक्ष मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा एकज शिल्पी ऐस. डी-३८, इंडस्ट्रियल लॉरिया, साह-१, पश्चिम 281004 हाथ सुनिता।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बर्तन-मीट)

978-81-7450-881-2

बरखा लमिक पुस्तकमाला यहाँ और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'साधारे के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बरखा की कहानियाँ बार सर्वां और पौय लंबावस्तुओं के विस्तृत हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुलाई के लिए पढ़ने और स्वयं पढ़ने बनने में मदद करती है। बच्चों को रोकपड़ी की लोटी-लोटी बटनाएँ, कहानीयाँ जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि लोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रत्युत्र भाजा भी किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना भीखने और स्वयं पढ़तक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यक्रमों के द्वारा क्षेत्र में सज्जानामक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किरणें ढाल सकें।

शलोचिका सुरक्षित

उपलब्ध की पुंछनुपर्याप्ति के बिना इस उकड़न के किसी भी कानुनी लागत नहीं होनीचाही, नहीं, गोंदेणपरिवर्ती, गोंदार्डिंग-अवयव विस्तो अन्य विधि से भूमि प्रदान प्रदूषित हुआ उकड़न सम्प्राप्त अवयव छानवण विचित है।

एन.सी.ई.आर.टी. वा. प्रशिक्षण विभाग के कानूनोंमय

- एन.सी.ई.आर.टी. वा. श्री आर्यिद गुरा, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26552298
- 105, 106 लोटे रोड, हैंडे एक्स्प्रेस, दिल्लीनगर, बन्देश्वर 110 005 फ़ोन : 090-26725740
- नवरीमन द्वारा भवन, इकाया गोपीनाथ, असमाजन 160 101-4 फ़ोन : 031-27541446
- श्री. अस्त्युदी. कैपा, विवर: गोपनी वर्ष अपार्टमेंट, गोपनीनगर 700 114 फ़ोन : 031-25500434
- श्री. अस्त्युदी. गोपनी, गोपनीनगर, गोपनी 700 114 फ़ोन : 031-36798860

उकड़न सहाय्य

अध्यक्ष, उकड़न विभाग : नई दिल्ली 110016
नुक्ता संपादक : नई दिल्ली

मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिल कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गोपन गोपनी

तालाब के मज़े



काजल



माधव



2

काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था।
दोनों तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे।
उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।



3

एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।
तालाब सफेद बगुलों से भरा हुआ था।



काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए।
दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे।
दोनों ने बगुलों को पकड़ने की कोशिश भी की।



5

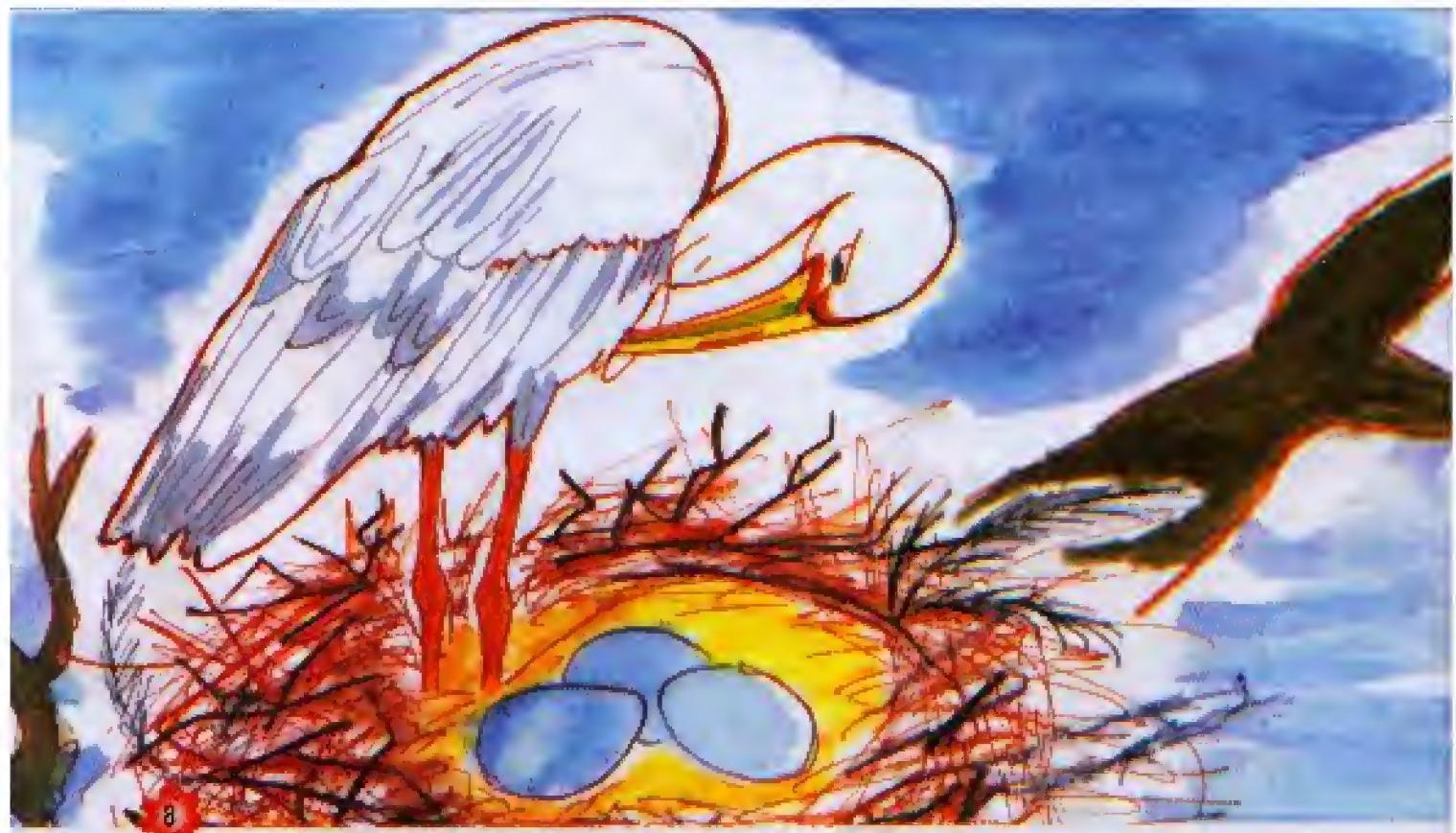
अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई।
मोनी बगुलों पर भौंकने लगी।
काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।



लेकिन मोनी भौंकती ही रही।
वह दौड़कर बगुलों पर झपटी।
काजल ने उसे गोद में उठा लिया।



माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए।
तालाब के उस तरफ उन्हें कुछ घोंसले दिखे।
बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।



घोंसलों में तिनके, घास और पंख लगे हुए थे।
बगुलों के घोंसलों में अंडे भी थे।
काजल और माधव दूर से अंडों को देखते रहे।



9

दोनों रोज़ अंडों को देखने लगे।
हर एक घोंसले में तीन या चार अंडे थे।
अंडे हल्के नीले रंग के और छोटे-बड़े थे।



10

थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रंग मटमैला हो गया।
उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए।
छोटे बगुले आवाज निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।



11

बगुले अपनी चोंच में उनके लिए खाना लेकर आते।
वे बच्चों की चोंच में खाना डालते थे।
काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।



छोटे बगुले अब धोंसलों से बाहर भी आते थे।
तालाब के किनारे खूब सारे छोटे-छोटे बगुले दिखने लगे।
काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।



13

धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे।
वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे।
वे तालाब में मछली और मेंढक भी पकड़ने लगे थे।



एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए।
काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा।
उन्हें पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।

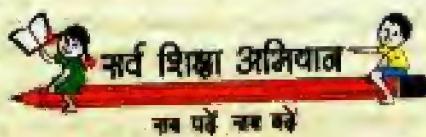


15

उस दिन मोनी फिर तालाब पर आ गई।
काजल ने उसे भगाया नहीं।
मोनी उन दोनों के साथ ही घूमती रही।



तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई।
काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए।
दोनों ने भैंसों की पीठ पर चौक से अपना नाम भी लिखा।



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बाल-वैट)

978-81-7450-881-2